जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक : डॉ. बी.एस. द्विवेदी
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 190
दिनांक 15.12.2023

बहुमूल्य परंपरागत किस्मों को संरक्षित एवं संवर्धन की दिशा में जनेकृविवि की गौरवशाली उपलब्धि– कुलपति डॉ. पी.के. मिश्रा

विगत वर्षो से अब तक कुल 153 किसानों की किस्मों का पंजीयन हुआ

विश्वविद्यालय के प्लांट वैरायटी प्रोटेक्शन सेल की टीम को कुलपति ने दी बधाई

जबलपुर 15 दिसम्बर, 2023। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय,जबलपुर के कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा की प्रेरणा एवं संचालक अनुसंधान सेवायें डॉ. जी.के. कौतू के मार्गदर्शन में कृषि वैज्ञानिकों द्वारा सतत् रूप से किसानों की उन्नति व उत्तरोत्तर प्रगति के क्षेत्र में लगातार कार्य किये जा रहे हैं। जिससे किसानों की आय बढ़े और विकसित भारत की दिशा एक पहल हो सके साथ ही पौष्टिक भोजन आम जनता की थाली में पहुंच सकें। इसी श्रृंखला में विश्वविद्यालय द्वारा पुरानी व क्षेत्र विशेष की बहुमूल्य किस्मों को संरक्षित एवं संवर्धन के साथ ही गुणवत्ता के मानक को बनाए रखते हुये इन किस्मों का अधिकार व संरक्षण, कृषकों को मिले, इस क्षेत्र में लगातार प्रयास किया जा रहा था, और अभी तक कुल 153 किसान की किस्मों का पंजीयन हो चुका है। इस गौरवशाली उपलब्धि पर कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा ने विश्वविद्यालय के प्लांट वैरायटी प्रोडक्शन सेल की प्रभारी डॉ. स्तुति शर्मा वैज्ञानिक, डॉ. शिवरामाकृष्णन, वैज्ञानिक एवं डॉ. निधि पाठक,वैज्ञानिक सहित पूरी टीम को बधाईयां प्रेषित करते हुये कहा कि किसानों के हित में यह एक अनूठी पहल है, और कृषि वैज्ञानिकों की अथक मेहनत एवं परिश्रम का फल है कि पुरानी किस्मों का संरक्षण, संवर्धन एवं इन्हें सहेजने का बहुत की उत्कृष्ट कार्य किया जा रहा है। जिससे किसानों को इसका फायदा होगा।

विश्वविद्यालय के संचालक अनुसंधान सेवायें डॉ. जी.के. कौतु ने इस विशेष उपलब्धि पर जानकारी देते हुये बताया कि किसानों द्वारा परंपरागत एवं महत्वपूर्ण फसलों को वर्षो से उगाया जा रहा था। कृषकों को इसका व्यापक लाभ कैसे प्राप्त हो, इस दिशा में सार्थक प्रयास कृषि वैज्ञानिकों द्वारा जारी था, परिणामस्वरूप भारत सरकार नई दिल्ली के पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण द्वारा विगत वर्षो से अब तक कुल 153 किसानों की किस्मों का पंजीयन हो चुका है। जिसमें धान, गेहूं, चना और सोयाबीन को मिलाकर कुल 13 फसलें शामिल हैं। डॉ. कौतु ने बताया कि आदिवासी,जनजाति क्षेत्रों की 52 फसलों की साढ़े 14 सौ किस्मों को चिन्हित किया गया है। जिसे आगामी वर्षो में पंजीयन कराने का लक्ष्य रखा गया है। विश्वविद्यालय के संचालक विस्तार सेवायें डॉ. दिनकर प्रसाद शर्मा ने जानकारी देते हुये बताया कि इसमें प्रदेश के कुल 17 जिले के किसान शामिल हैं, इसका सीधा लाभ क्षेत्र के कृषकों को प्राप्त होगा। इससे कृषक अपने उत्पाद को क्षेत्र एवं जिला में व्यवसायीकरण करके लाभ अर्जित कर सकेंगे।

विश्वविद्यालय के प्लांट वैरायटी प्रोटेक्शन सेल की प्रभारी डॉ. स्तुति शर्मा,वैज्ञानिक ने बताया कि यह प्रथम ऐसा सेल है, जिसके अंतर्गत कृषकों को भारत सरकार ने उनके नाम से फसल की किस्में हेतु पंजीकृत किया है। डॉ. डी.के. अग्रवाल,रजिस्ट्रार जनरल, पीपीवी एवं एफआरए, नई दिल्ली ने जानकारी देते हुये बताया कि इस कार्य के लिये विश्वविद्यालय,कृषकों व भारत सरकार के बीच सेतु का कार्य कर रहा है,और कृषकों की किस्मों के विषय में जागरूकता, संरक्षण व सतत् प्रशिक्षण विश्वविद्यालय में दिया जा रहा है।

इस गौरवशाली उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.प्रमोद कुमार मिश्रा, संचालक अनुसंधान सेवाये डॉ. जी.के. कौतु, संचालक विस्तार सेवायें डॉ. दिनकर प्रसाद शर्मा, अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. धीरेन्द्र खरे, अधिष्ठाता उद्यानिकी संकाय डॉ. एस.के. पांडे, अधिष्ठाता कृषि अभियांत्रिकी संकाय डॉ. अतुल श्रीवास्तव, संचालक शिक्षण डॉ. अभिषेक शुक्ला, संचालक प्रक्षेत्र डॉ. आर.एस.शुक्ला, अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय,जबलपुर डॉ. पी.बी.शर्मा, कुलसचिव श्री रेवासिंह सिसोदिया, लेखानियंत्रक श्री डी.आर. महोबिया, अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. अमित शर्मा सहित सभी विभागाध्यक्ष, वैज्ञानिकों ने विश्वविद्यालय के प्लांट वैरायटी प्रोटेक्शन सेल की प्रभारी डॉ.स्तुति शर्मा, वैज्ञानिक, डॉ. शिवरामाकृष्णन, वैज्ञानिक एवं डॉ. निधि पाठक,वैज्ञानिक सहित पूरी टीम को शुभकामनयें एवं बधाईयां प्रेषित की हैं।